KISHORI SINHA MAHILA COLLEGE

(A CONSTITUENT UNIT OF MAGADH UNIVERSITY)
AURANAGABAD,BIHAR-824101

Dr Arunjay Kumar Singh

Department Of AI&AS

Dr Amarjay Kumar Singh
Deptt of A.I.&A.S
Date - 20.4.2020

ॐ

B.A. Part (I) Hons

Paper - (I)

Q. Carrer and achievements of Skandgupta.

स्कन्दगुप्त की जीवन-चरित एवं उपलब्धियों की विवेचना करें।

ANS: — कुमारगुप्त प्रथम की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र स्कन्दगुप्त मगध के राजसिंहासन पर बैठा। सम्भवतः सिंहासन के लिए स्कन्दगुप्त को अपने भाइयों से संघर्ष करना पड़ा था परन्तु इसका कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। स्कन्दगुप्त बड़ा ही वीर, साहसी तथा बलवान् सेनानायक था। अपने पिता के जीवन काल में ही अपने पौरुष तथा बल का पूर्ण परिचय दिया था। जब 455 ई० के आस-पास उसके पिता के राज्य पर आपत्ति के मेघ उमड़ रहे थे और शत्रुओं के आक्रमण आरम्भ हो गए थे तब युवराज स्कन्द ने अपने बाहुबल से अपने पिता के राज्य की रक्षा की थी और अपने वंश की विचलित राजलक्ष्मी की रक्षा के लिए तीन माह तक भूमि पर शयन किया था। भितरी के स्तम्भलेख से हमें पता चलता है कि जिस प्रकार शत्रुओं को मार कर श्रीकृष्ण देवकी के पास आये थे उसी प्रकार स्कन्दगुप्त भी युद्ध का विजय पर हर्ष के आँसू बहाता माँ के पास आया था।

स्कन्दगुप्त के सिंहासन पर बैठते ही उसे भयंकर शत्रुओं का सामना करना पड़ा। यह थे हूण थे जो दूसरी शताब्दी ई०पू० में चीन की पश्चिमी सीमा पर मध्य-एशिया में रहते थे। जब पश्चिम की ओर इनका पर्यटन आरम्भ हुआ तो इनकी एक शाखा ने जिसे श्वेत हूण कहते हैं आक्सस की घाटी पर अपना अधिकार जमा लिया और गान्धार पर विजय प्राप्त कर ली। स्कन्दगुप्त के सिंहासनारूढ़ होने के थोड़े ही दिन बाद हूण दल की भांति सिन्धु नदी को पार

कर स्कन्दगुप्त के साम्राज्य पर टूट पड़े। स्कन्दगुप्त ने बड़े धैर्य तथा साहस के साथ उनका सामना किया और उन्हें बुरी तरह हराया। यह घटना 457-458 ई० के आस-पास का प्रतीत होती है। परन्तु हूणों के आक्रमण बन्द न हुए और इन आक्रमणों का गुप्त साम्राज्य पर बहुत बड़ा धक्का लगा। हूणों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में स्कन्दगुप्त ने देवताओं के लिए बलि-अनुष्ठान करवाये थे और एक विष्णु स्तम्भ का निर्माण करवाया जो गाजीपुर के भिटारी नामक गाँव में अभी भी पाया जाता है।

स्कन्दगुप्त के शासन-काल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना सुदर्शन झील की मरम्मत थी। इस झील का इतिहास बहुत पुराना है। इस झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तपति पुष्यगुप्त वैश्य ने गिरनार पर्वत के पास कराया था। इस झील से अशोक ने एक नहर निकलवायी थी। यह बाँध 150 ई० में टूट गया था। अपने व्यक्तिगत कोष से 'रुद्रदामन' ने इस बाँध का पुनः निर्माण करवाया था। पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित के निरीक्षण में स्कन्दगुप्त ने इस झील की फिर से मरम्मत कराई। चक्रपालित ने इस झील पर एक विष्णु मन्दिर का भी निर्माण करवाया था।

स्कन्दगुप्त स्वयम् वैष्णव धर्म का अनुयायी था। परन्तु अपने पूर्वजों की भाँति उसमें उच्चकोटि का धार्मिक सहिष्णुता थी। सभी मतों तथा धर्मों के प्रति उसका व्यवहार उदार था। बुलन्द शहर जिले में इन्द्रपुर नामक स्थान पर दो क्षत्रियों ने एक सूर्यदेव का मन्दिर बनवाया था। एक उदार ब्राह्मण ने इस मन्दिर में एक दीपक जलाने की व्यवस्था के लिए तैलिक श्रेणी के पास इतना धन जमा कर दिया था कि उसके ब्याज से प्रतिदिन उस मन्दिर में एक दीपक जलाया जा सके।

स्कन्दगुप्त का काल घोर संकट का काल था परन्तु उसने शासन की उपेक्षा न की। उसने अपने साम्राज्य की परम्पराओं की रक्षा की और अपने पूर्वजों के साम्राज्य को सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित रखा। उसने पाटलिपुत्र से हटकर अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया क्योंकि अयोध्या उसके राज्य के केन्द्र में स्थित था। स्कन्दगुप्त स्वयं एक योग्य एवं कर्मठ सम्राट था। उसका शासन-काल 455 से 467 ई० तक माना जाता है।

(THE END)